

शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा हिंदी के प्रति घटते रुझान के कारणों का अध्ययन

सुनील कुमार भट्ट*

बच्चे की शिक्षा में मातृभाषा का विशेष महत्व है। मातृभाषा बच्चे की शिक्षा का आधार होती है। मातृभाषा को एक स्वतंत्र विषय के साथ-साथ शिक्षा के माध्यम के रूप में भी स्वीकार किया जाना चाहिए। परंतु विगत कुछ वर्षों से भारतीय समाज में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रति रुझान लगातार कम हो रहा है। बच्चे के सर्वांगीण विकास में मातृभाषा के महत्व को देखते हुए यह अत्यंत चिंता का विषय है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के कारणों का अध्ययन करना तथा मातृभाषा की उपयोगिता के विषय में अभिभावकों के विचारों का अध्ययन करना था। शोध हेतु गुणात्मक शोध विधि का अनुसरण करते हुए 60 अभिभावकों का साक्षात्कार किया गया। विश्लेषण करने पर मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के कुछ कारण प्राप्त हुए, जैसे— अभिभावकों में जागरूकता का अभाव, दिखावा, अंधानुकरण एवं प्रतिस्पर्धा की भावना आदि। अभिभावकों द्वारा अंग्रेजी माध्यम में अपने बच्चों को भेजकर समाज में स्वयं को प्रतिष्ठित साबित करने की चाह तथा जीवन स्तर से अंग्रेजी के जुड़ने के कारण से भी हिंदी की मान्यता घटी है। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में माध्यम के रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है। इस संदर्भ में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। वस्तु स्थिति यह है कि माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व है। इस कारण माध्यम के रूप में हिंदी भाषा की माँग पर असर पड़ा है। रोजगार के अवसरों की बात की जाए तो प्रथम शर्त अंग्रेजी होती है। अभिभावक मातृभाषा की उपयोगिता के विषय में गहन समझ नहीं रखते हैं। अतः सुझाव दिया जाता है कि शिक्षा में मातृभाषा के महत्व को लेकर वैश्विक स्तर पर हुए शोध कार्यों तथा विशेषज्ञों की राय को दृष्टिगत रखते हुए मातृभाषा के प्रोत्साहन की दिशा में विभिन्न योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित किए जाएँ। समाज के प्रभावशाली व्यक्ति, शिक्षाविद्, योजना निर्माता, नेता तथा शिक्षक दोहरे चरित्र को त्याग कर स्वयं भी अपने पाल्यों की शिक्षा हेतु मातृभाषा माध्यम में शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों का चयन करें।

*शोध छात्र, शिक्षा संकाय, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड

पृष्ठभूमि

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही भावों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। भाषा मनुष्य द्वारा अपने मन के विचारों को मूर्त रूप देने का माध्यम है। भाषा ही वह विशिष्ट योग्यता है जो मनुष्य को जीव जगत के अन्य जीवधारियों से अलग करती है। बच्चा जन्म के बाद अपने परिवेश से जो भाषा सीखता है, उसे 'मातृभाषा' कहते हैं। मातृभाषा को सीखने के लिए बच्चे को कोई विशिष्ट प्रयास नहीं करना पड़ता है। मातृभाषा का विशिष्ट संबंध बच्चे की शिक्षा से भी है। मातृभाषा बच्चे की शिक्षा का आधार होती है। अतः उसे एक स्वतंत्र विषय में अध्यापन के साथ-साथ शिक्षा के माध्यम के रूप में भी स्वीकार किया जाना चाहिए। मातृभाषा द्वारा अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता तथा सृजनात्मकता का विकास होता है।

विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर मातृभाषा के महत्व को रेखांकित किया है। स्वतंत्रता से पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा की तात्कालिक स्थिति एवं भावी आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए समय-समय पर अनेक आयोगों का गठन किया गया। इन आयोगों की सिफारिशों के आधार पर शिक्षा में मातृभाषा के महत्व से संबंधित सुझाव प्रदान किए गए। वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रति लोगों का रुझान निरंतर कम होता जा रहा है। बड़ी संख्या में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों को मान्यता प्रदान की जा रही है। हिंदी माध्यम विद्यालयों में नामांकन में गिरावट दर्ज की जा रही है। हालाँकि तमाम मंचों से बुद्धिजीवियों, नीति-निर्माताओं एवं विशेषज्ञों द्वारा मातृभाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए मातृभाषा आधारित

शिक्षा को प्रोत्साहित करने की पैरवी की जा रही है। इसके साथ ही शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रति घटते रुझान की ओर ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है। अतः प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के कारणों को गहराई से समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित साहित्य की समीक्षा करते हुए यह ज्ञात हुआ कि पूर्व में मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के कारणों का अध्ययन करने के प्रयास नहीं हुए हैं। हालाँकि, मातृभाषा के महत्व को उल्लिखित करने वाले शोध बहुतायत से हैं। यह शोध प्रदर्शित करते हैं कि मातृभाषा का बच्चे के जीवन में विशेष महत्व है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर बच्चे के जीवन में मातृभाषा की उपयोगिता के विषय में अनेक अध्ययन हुए हैं।

विश्व बैंक (2005) ने अपने प्रत्यावेदन में मातृभाषा के महत्व को उल्लिखित करते हुए कहा यह सर्वविदित है कि यदि अनुदेशन हेतु स्थानीय भाषा का प्रयोग किया जाए तो स्थानीय विषयवस्तु को प्रमुखता से पाठ्यक्रम में समावेशित किया जा सकता है। अधिगमकर्ता द्वारा इस प्रकार अर्जित किए गए अधिगम अनुभव अधिक सार्थक सिद्ध होंगे। स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हुए कक्षा संसाधन के रूप में अभिभावकों एवं सामुदायिक संसाधनों की सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है। यूनेस्को (2007) के अनुसार मातृभाषा को मात्र किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधता को संरक्षित करने के माध्यम के तौर पर ही नहीं देखा जाना चाहिए, अपितु इसका व्यापक शैक्षिक महत्व भी है। इसके अतिरिक्त भाषा अधिगम विद्यालयी पाठ्यक्रम का एक उपकरण मात्र नहीं है। भाषा का प्रारंभ बच्चे

के जन्म से होता है तथा यह उसके तात्कालिक सामाजिक एवं भाषायी परिवेश द्वारा प्रेरित होती है तथा जीवनपर्यंत जारी रहती है।

मातृभाषा आधारित अनुदेशन बच्चे तक ज्ञान एवं कौशलों को संप्रेषित करने का सर्वाधिक प्राकृतिक एवं प्रभावशाली माध्यम है। चूंकि वह अपने ज्ञान को संगठित करने की प्रक्रिया में विद्यालय एवं विद्यालय के बाहर की क्रियाओं में प्रतिभाग करता है। यूनेस्को के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को मातृभाषा में सीखने के अवसर उपलब्ध होने चाहिए। प्रारंभिक स्तर पर यदि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में सीखता है तो वह भविष्य में अन्य भाषाओं में अधिक आत्मविश्वास के साथ सीख सकता है। यूनेस्को (2007) के प्रत्यावेदन में असम राज्य के गोलापारा ज़िले की राभा प्रजाति पर क्रियान्वित राभा मातृभाषा आधारित अधिगम परियोजना की समीक्षा की गई। इसमें उल्लिखित किया गया कि राभा मातृभाषा आधारित अधिगम परियोजना के अंतर्गत मातृभाषा में साक्षरता कार्यक्रम संचालित कर अधिगम वातावरण निर्मित करने का प्रयास किया गया। वयस्कों को उनकी मातृभाषा में शिक्षित करने से बच्चे भी अपनी मातृभाषा में सीखने के लिए प्रेरित हुए। यूनेस्को (2007) के प्रत्यावेदन में बांग्लादेश के गोदागरी उपज़िला के अघोलपुर गाँव में वर्ष 2002 में प्रारंभ किए गए एक मातृभाषा आधारित कार्यक्रम की समीक्षा की गई। इसमें उल्लिखित किया गया है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ तुलनात्मक मूल्यांकन में यह पाया गया कि आरोन समुदाय के जिन विद्यार्थियों को मातृभाषा साद्री में शिक्षण सामग्री प्रस्तुत की गयी उनका अन्य की तुलना में अधिगम स्तर अच्छा था। यूनेस्को (2007) के प्रत्यावेदन में माली के सिगोऊ शहर में वर्ष 1987

से 1993 तक मातृभाषा आधारित कार्यक्रम की समीक्षा की गई है। इसमें उल्लिखित किया गया है इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों में से 77 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कक्षा 7 की राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की जबकि दूसरी ओर फ्रेंच माध्यम से पढ़कर आए विद्यार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 66 था। इस प्रकार विद्यार्थियों की उपलब्धि अन्य की तुलना में बेहतर आँकी गई। यूनेस्को (2007) के प्रत्यावेदन में अमेरिका में वर्ष 1985 से 2001 तक दो शोधकर्ताओं वेन थॉमस तथा विर्जिना कोलियर द्वारा 16 वर्षों तक किए गए मातृभाषा आधारित अध्ययन की समीक्षा भी की गई है। इसमें उल्लिखित किया गया है कि जिन बच्चों का प्रारंभिक 6 वर्ष या उससे उच्च स्तर तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा था, उनका अन्य की तुलना में अकादमिक उपलब्धि का स्तर अच्छा था। इसके साथ ही इसमें यह भी बताया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम शिक्षा व्यवस्था में उन विद्यार्थियों की सफलता में उनकी मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। पाल, वाई और एस. अय्यर, (2012) द्वारा एक ख्याति प्राप्त अभियांत्रिकी संस्थान में अध्ययनरत हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों से पढ़ कर आए विद्यार्थियों की प्रोग्रामिंग क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन प्रयोगात्मक शोध विधि का अनुसरण करते हुए किया गया। अध्ययन हेतु विद्यार्थियों को 31-31 विद्यार्थियों के तीन समूहों में बाँटा गया। अनुदेशन सामग्री के आधार पर विद्यार्थियों द्वारा अर्जित प्रोग्रामिंग क्षमता का परीक्षण किया गया। परीक्षण परिणामों का विश्लेषण करने पर तीनों समूहों की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं देखा गया

जो यह सिद्ध करता है कि हिंदी माध्यम पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थियों को भाषा संबंधी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। रिकब्लांका, जे. वी. (2014) द्वारा फिलीपींस में किए गए शोध के परिणाम में यह पाया गया कि जिन विद्यार्थियों को मातृभाषा में अनुदेशन प्रदान किया गया, उनका गणितीय उपलब्धि का स्तर अंग्रेजी माध्यम से अनुदेशन प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च था। उपरोक्त सभी शोध कार्यों की समीक्षा करने पर ज्ञात हुआ कि अधिकांश शोध बच्चे की शिक्षा में मातृभाषा के महत्व को प्रदर्शित करते हैं। विभिन्न शोध प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा के महत्व की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। शोध परिणाम दर्शाते हैं कि मातृभाषा का उपयोग करते हुए बच्चे अधिक स्वाभाविक तरीके से स्वयं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। इसके साथ ही कक्षा-कक्ष अंतः क्रिया में खुलकर प्रतिभाग कर सकते हैं। बच्चे की शिक्षा में मातृभाषा का संबंध उसकी अकादमिक उन्नति से होता है। वैश्विक स्तर पर मातृभाषा की उपयोगिता सिद्ध को चुकी है। बच्चे के सर्वांगीण विकास में मातृभाषा का महत्व सिद्ध होने के बावजूद भारतीय परिदृश्य में जिस तरह मातृभाषा की अवहेलना की जा रही है, वह वास्तव में चिंताजनक है। भारत में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रचार-प्रसार पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में समाज में मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के कारणों का विश्लेषण किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

समस्या कथन

शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा हिंदी के प्रति घटते रुझान के कारणों का अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

- शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा हिंदी के प्रति घटते रुझान के कारणों का अध्ययन करना।
- मातृभाषा की उपयोगिता के विषय में अभिभावकों के विचारों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

- मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के प्रमुख कारण क्या हैं?
- शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग के विचार से अभिभावक कितना सहमत हैं?
- मातृभाषा की उपयोगिता से अभिभावक कितना परिचित हैं?
- शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा की अवहेलना के कारण बच्चे के विकास के नकारात्मक रूप से प्रभावित होने के तथ्य से अभिभावक कितना परिचित हैं?

शोध प्रारूप

शोध की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए एवं गहन सूचनाओं के संग्रहण हेतु शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु गुणात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा विकासखण्ड — बेरीनाग, जनपद — पिथौरागढ़, राज्य — उत्तराखण्ड के परिवारों को सम्मिलित किया गया। (परिवारों में से भी अभिभावकों को शोध में सम्मिलित किया गया।)

प्रतिदर्श

जैसा कि ज्ञात है कि प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक है। अतः शोध प्रकृति के अनुरूप शोधार्थी द्वारा उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि का पालन करते हुए

बेरीनाग विकास खण्ड से 60 व्यक्तियों का चयन किया गया। प्रतिदर्श के अंतर्गत विभिन्न आय वर्ग, शैक्षिक स्तरों के व्यक्तियों का चयन किया गया।

उपकरण

शोध समस्या की प्रकृति के अनुरूप शोधार्थी द्वारा शोध हेतु समूह परिचर्चा तथा साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया। शोध प्रक्रिया में आँकड़ों के संग्रहण हेतु प्रमुखतः खुली सीमा के संरचनात्मक साक्षात्कार उपकरण का उपयोग किया गया। आरंभिक वार्तालाप के पश्चात् अभिभावकों की अनुमति लेकर साक्षात्कार का श्रव्य अभिलेखन किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियाँ

चूँकि, शोध की प्रकृति गुणात्मक है, अतः आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों के स्थान पर गुणात्मक विश्लेषण किया गया। गुणात्मक विश्लेषण की प्रक्रिया में साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त सूचनाओं को लिपिबद्ध करते हुए विश्लेषण किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्ता द्वारा शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु गुणात्मक शोध विधि का चयन किया गया था। इसके अनुक्रम में शोधार्थी द्वारा 60 प्रयोज्यों का चयन किया गया। गहन सूचनाओं के संग्रहण हेतु प्रयोज्यों का साक्षात्कार किया गया। साक्षात्कार के दौरान प्रत्येक प्रयोज्य की अनुमति लेकर वार्तालाप का श्रव्य अभिलेखन किया गया। तत्पश्चात् प्राप्त जानकारी का प्रयोज्यवार प्रतिलेखन किया गया तथा प्राप्त समस्त जानकारीयों को बिंदुवार वर्गीकृत किया गया।

निष्कर्ष एवं परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के कारणों को जानने

का प्रयास किया गया है। शोध उपकरण के रूप में साक्षात्कार प्रविधि का उपयोग किया गया। इसके साथ ही साक्षात्कार का श्रव्य अभिलेखन किया गया तत्पश्चात् प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत शोध के परिणाम निम्नवत हैं—

मातृभाषा हिंदी के प्रति घटते रुझान के प्रमुख कारणों के संबंध में

- क्षेत्र में स्तरीय हिंदी माध्यम विद्यालयों का अभाव है।
- हिंदी माध्यम के रूप में सिर्फ राजकीय प्राथमिक विद्यालय बचे हैं। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति शैक्षिक रूप से चिंतनीय है।
- अभिभावकों में दिखावा, अंधानुकरण एवं प्रतिस्पर्धा की भावना है। समाज में अभिभावक एक-दूसरे की नकल करना चाहते हैं।
- जिन परिवारों के पास पर्याप्त संसाधन हैं वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की खोज में निजी विद्यालयों की ओर रुख कर रहे हैं।
- समाज में जो भी अभिभावक अपने पाल्य को हिंदी माध्यम से पढ़ाते हैं उन्हें गरीब माना जाता है। इसके साथ ही उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है।
- देश में अंग्रेजी का बढ़ता प्रचलन, अंग्रेजी के सर्वत्र प्रयोग, उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का बोलबाला होना एक प्रमुख कारण है।
- अभिभावकों के मन में अंग्रेजी माध्यम में अपने बच्चों को भेजकर स्वयं को प्रतिष्ठित साबित करने की चाह है। जीवन स्तर से अंग्रेजी के जुड़ने के कारण हिंदी की मान्यता घटी है।
- रोजगार के लिए अंग्रेजी भाषा आवश्यक हो चुकी है। रोजगार के अवसरों की बात की जाए तो प्रथम शर्त अंग्रेजी होती है।

- समाज में उच्च वर्ग के लोग अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं या जब कोई अंग्रेजी बोलता है, तो उसे विद्वान एवं प्रतिष्ठित समझा जाता है।
- हिंदी माध्यम के प्रति रुचि कम होने का प्रमुख कारण लचर व्यवस्था है। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की जवाबदेही तय न होना एक कारण के रूप में देखा गया।
- अभिभावकों में जागरूकता का अभाव भी प्रमुख कारण है।
- कुमाँऊनी समाज में अपनी भाषा से पलायन की प्रवृत्ति गहरी हो चुकी है, जिस कारण वे अपनी भाषा, गाँव व संस्कृति से लगातार पलायन कर रहे हैं।

शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग के संबंध में

- अधिकांश अभिभावक चाहते हैं कि मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम होना चाहिए।
- सरकार हिंदी माध्यम के प्रोत्साहन की दिशा में सख्त कदम उठाए।
- शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा से बेहतर विकल्प और कुछ नहीं हो सकता।
- सरकार को हिंदी माध्यम को प्रोत्साहित करने की दिशा में प्रयास करने चाहिए।

मातृभाषा की उपयोगिता के संबंध में

- कुछ अभिभावक मानते हैं कि बच्चे का विकास उसकी मातृभाषा के सानिध्य में ही बेहतर हो सकता है।
- कुछ अभिभावक मानते हैं कि बच्चों की शिक्षा के लिए उनकी मातृभाषा से बेहतर विकल्प कोई अन्य भाषा नहीं हो सकती।

- कुछ अभिभावक हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम की समझ नहीं रखते। उन्हें दोनों माध्यम समान लगते हैं।

मातृभाषा की अवहेलना के कारण बच्चे का विकास नकारात्मक रूप से प्रभावित होने के तथ्य के प्रति जागरूकता के संबंध में

कुछ अभिभावक मातृभाषा के स्थान पर अन्य भाषा को माध्यम बनाने के कारण बच्चे पर पड़ने वाले अनावश्यक दबाव की बात स्वीकार करते हैं परंतु नकारात्मक प्रभावों के प्रति जागरूक नहीं हैं।

अन्य निष्कर्ष

- सरकार शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम के प्रचार-प्रसार को नियंत्रित करे।
- अधिकांश अभिभावक हिंदी माध्यम विद्यालय के रूप में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों को ही देखते हैं।
- हिंदी माध्यम विद्यालयों में शिक्षा का स्तर अच्छा हो तो अभिभावक अपने बच्चों को हिंदी माध्यम में भेजना पसंद करेंगे। अभिभावक कहते हैं कि हिंदी माध्यम का पर्याय सिर्फ राजकीय प्राथमिक विद्यालय बचे हैं, जहाँ सुविधाओं एवं संसाधनों का अभाव है।
- अभिभावक सरकारी विद्यालयों की चिंताजनक स्थिति पर विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि सरकार को इस और ध्यान देना चाहिए और प्रत्येक ग्राम सभा में विद्यालय खोलने से अच्छा कुछ ग्राम सभाओं को मिलाकर एक उच्च श्रेणी का हिंदी माध्यम का विद्यालय खोला जाए जहाँ विद्यार्थियों एवं शिक्षकों दोनों की संख्या उल्लेखनीय होगी।

- एक शिक्षिका के अनुसार पुराने शिक्षकों द्वारा अपने दायित्वों का उचित निर्वहन न किए जाने के कारण विद्यालयों की साख में गिरावट आयी है तथा विभागीय अधिकारियों की लापरवाही भी एक प्रमुख कारण है।
- अभिभावकों का कहना है कि राजकीय विद्यालयों के शिक्षक अपने पाल्यों को राजकीय विद्यालयों में नहीं पढ़ा रहे हैं तो समाज के आम अभिभावक सोचते हैं, जब शिक्षक ही नहीं पढ़ रहा है तो इसका अर्थ है गुणवत्ता ठीक नहीं है, अतः अभिभावक भी राजकीय विद्यालयों से पलायन कर रहे हैं।
- अभिभावक कहते हैं कि नेता एक ओर तो हिंदी और शिक्षा में हिंदी माध्यम की वकालत करते हैं वहीं दूसरी ओर उनके बच्चे अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा ग्रहण करते हैं तथा उच्च अध्ययन हेतु विदेश जाते हैं।
- सरकारी स्तर पर अंग्रेजी का प्रयोग एक प्रमुख कारण है। अभिभावक चाहते हैं कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों, नेताओं एवं सरकारी कर्मचारियों पर यह नियम लागू होना चाहिए कि वह अपने पाल्यों को सरकारी हिंदी माध्यम विद्यालयों में पढ़ाएँ।
- अभिभावक ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के नाम पर हो रहे पलायन को भी रेखांकित करते हैं।
- अभिभावक कुमाँऊनी समाज में अपनी भाषा से पलायन की प्रवृत्ति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहते हैं कि हम लोग अपनी भाषा को बोलने में शर्म महसूस करते हैं। माता-पिता बच्चों को कुमाँऊनी बोलने से रोक रहे हैं।

- अभिभावकों के विचारों पर उनकी आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्तर का प्रभाव देखा गया। अभिभावकों में जागरूकता का अभाव है तथा सोच एवं उसके क्रियान्वयन में स्पष्ट विरोधाभास दिखाई देता है।

सुझाव

जैसा कि शोध-निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रति घटते रुझान के कारण सर्वत्र अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव एवं समाज में अंधानुकरण की प्रवृत्ति है। कुछ अभिभावक हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम में कोई अंतर नहीं समझते हैं। अभिभावकों में आवश्यक जागरूकता का अभाव है। वह शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा के महत्व के विषय में अनभिज्ञ हैं। उनके विचारों में विरोधाभास है। वह चाहते तो हैं कि हिंदी माध्यम को अपनाया जाए परंतु समाज के प्रभाव में साहस नहीं कर रहे हैं। अभिभावक सरकार पर पूरी ज़िम्मेदारी डालते हुए उम्मीद करते हैं कि सरकार सभी के लिए यह नियम बना दे कि शिक्षा का माध्यम केवल मातृभाषा ही होगी। इसके साथ ही वे अपेक्षा करते हैं कि सरकार सुनिश्चित करे कि सभी प्रभावशाली व्यक्ति इसका अनुसरण करें। अतः बच्चों की शिक्षा में मातृभाषा के महत्व को लेकर वैश्विक स्तर पर हुए शोधों, विशेषज्ञों की राय को दृष्टिगत रखते हुए सरकार मातृभाषा के प्रोत्साहन की दिशा में पहल करे। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में जहाँ शिक्षा का माध्यम हिंदी है, उन्हें बरकरार रखा जाए। विद्यालयों की स्थिति की समीक्षा की जाए तथा उनमें समृद्ध शैक्षणिक वातावरण स्थापित किया जाए। विभिन्न योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन की दिशा में ठोस

पहल की जाए। समाज के प्रभावशाली व्यक्ति, शिक्षाविद्, योजना निर्माता, नेता तथा शिक्षक दोहरे चरित्र को त्याग कर स्वयं भी अपने पाल्यों की शिक्षा हेतु मातृभाषा माध्यम विद्यालयों का चयन करें।

शैक्षिक निहितार्थ

हमारे समाज में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा की वर्तमान स्थिति चिंताजनक है। बच्चे के विकास में मातृभाषा के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए यदि शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए तो बच्चे का स्वाभाविक एवं सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। हमें यह समझना चाहिए कि भाषा किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक समृद्धता को प्रदर्शित करती है। शिक्षा में मातृभाषा को स्थान देकर बच्चे की मौलिक चिंतन क्षमता, सृजनात्मकता एवं अभिव्यक्ति को बढ़ाया जा सकता है। अतः बच्चे के बेहतर एवं सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए मातृभाषा के प्रति घटते रुझान पर ध्यान दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही मातृभाषा को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाने चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध द्वारा प्राप्त परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए इस क्षेत्र में भविष्य में नवीन शोध भी किए जा सकते हैं। कुछ संभावित शोध सुझाव अग्रलिखित हैं—

- अन्य भौगोलिक क्षेत्रों में भी समान शोध किए जा सकते हैं, जैसे— राज्य के ही अन्य जिलों या अन्य राज्यों में।
- विभिन्न समूहों पर भी समान शोध किया जा सकता है, जैसे— शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों पर।
- सरकार द्वारा मातृभाषा के प्रोत्साहन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को लेकर भी शोध किया जा सकता है।
- बच्चे की शिक्षा में मातृभाषा की अवहेलना के कारण पड़ने वाले प्रभावों की जाँच हेतु शोध किया जा सकता है।
- राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के शैक्षणिक स्तर, संसाधनों एवं शिक्षकों की कार्यकुशलता के गहन अध्ययन हेतु शोध किया जा सकता है।

संदर्भ

- कर्लीगर, एन. एफ. 2002. *फ़ाउंडेशन ऑफ़ बिहेवियरल रिसर्च*. सुरजीत पब्लिकेशन, दिल्ली.
- कौल, एल. 2009. *मेथडोलॉजी ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*. विकास पब्लिकेशन हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.
- पाठक, पी. डी. 2013. *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ*. श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
- पाल, वाई. और एस. अय्यर. 2012, 18-20 जुलाई. *कम्पैरिजन ऑफ़ इंग्लिश वर्सेस हिंदी मीडियम स्टूडेंट्स फ़ॉर प्रोग्रामिंग एबिलिटीज़ एकवायर्ड थ्रो वीडियो बेस्ड इन्स्ट्रक्शन*. पेपर प्रेजेंटेटेड एट आईईईईई फ़ोर्थ इंटरनेशनल कॉन्फ़्रेंस ऑन टेक्नॉलजी फ़ॉर एजुकेशन, हैदराबाद, भारत. <http://ieeexplore.ieee.org/document/6305939/?reload=true> से 30 नवंबर 2017 को प्राप्त किया गया.
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू. और जे. वी. काहन. 1993. *रिसर्च इन एजुकेशन*. प्रेंटिस हॉल ऑफ़ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.
- मिश्र, पी. (संपादक). 2015. *पाठ्यक्रम में भाषा*. प्रथम संस्करण. वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा, राजस्थान.

- यूनेस्को. 2007. मदर टंग मैटर्स-लोकल लैंग्वेज एज़ ए की टू इफ़ेक्टिव लर्निंग. <http://unesdoc.unesco.org/images/0016/001611/161121e.pdf> से 19 फ़रवरी 2018 को प्राप्त किया गया.
- . 2007. मदर टंग बेस्ड लिटरेसी प्रोग्राम्स — केस स्टडीस ऑफ़ गुड प्रैक्टिस इन एशिया. <http://unesdoc.unesco.org/images/0015/001517/151793e.pdf> से 19 फ़रवरी 2018 को प्राप्त किया गया.
- . 2011. एनहेनसिंग लर्निंग ऑफ़ चिल्ड्रन फ्रॉम डाइवर्स लैंग्वेज बैकग्राउण्डस मदर टंग बेस्ड बाइलिंग्वल ऑर मल्टीलिंग्वल एजुकेशन इन द अर्ली ईयर्स. पेपर कमिशनड फ़ॉर यूनेस्को. <http://unesdoc.unesco.org/images/0021/002122/212270e.pdf> 19 फ़रवरी 2018 को देखा गया।
- रिकब्लांका, जे. वी. 2014. इफ़ेक्टिवनेस ऑफ़ मदर टंग बेस्ड इन्स्ट्रक्शन ऑन प्यूपल'स एचीवमेन्ट इन मैथमैटिक्स (एमास्टर्स थीसिस मास्टर ऑफ़ आर्ट्स इन एजुकेशन, सेंट्रल मीडिनाओ यूनिवर्सिटी, फिलीपींस) http://www.academia.edu/10401049/Effectiveness_of_mother_tongue-Based_instruction_on_pupils_achievement_in_mathematics_a_masters_thesis_masters_of_arts_in_education_major_in_educational_administration 19 फ़रवरी 2018 को देखा गया।
- विश्व बैंक. 2005. इन देयर ऑन लैंग्वेज एजुकेशन फ़ॉर ऑल. इन एजुकेशन नोट्स. वाशिंगटन डी. सी: वर्ल्ड बैंक <https://documents1.worldbank.org/curated/en/374241468763515925/pdf/389060Language00of1Instruct01PUBLIC1.pdf> से 20 फ़रवरी 2018 को देखा गया।
- सिंह, ए. के. 2014. *रिसर्च मेथड्स इन साइकोलॉजी सोशियोलॉजी एण्ड एजुकेशन*. मोतीलाल बनारसीदास, नयी दिल्ली.